यीशुः हमारा ईश्वरीय उदाहरण

सर्वोच्च पिता का इकलौता पुत्र इस पृथ्वी पर बहुत से कारणों से अनुग्रह करने के लिए नीचे आया। इसका एक कारण तो पहाड़ी उपदेश प्रस्तुत करना और बहुत सी दूसरी ईश्वरीय शिक्षाएं देना था। उसके आने का एक अन्य कारण अपना लहू बहाना भी था। जबकि एक और कारण मृत्यु पर विजय पाना था। वह पृथ्वी पर इसलिए भी आया ताकि हमारे लिए एक आदर्श उदाहरण बन सके। स्वर्ग का परमेश्वर जानता था कि बच्चे अपने माता-पिता की नकल करने की कोशिश करते हैं। वह जानता था कि वयस्कों को भी उदाहरण की आवश्यकता होती है। हम में से कोई भी पूरी तरह से उसके पद चिह्नों पर नहीं चल सकता है, परन्तु हम इस बात से आनन्दित हैं कि हमारे सामने एक सिद्ध उदाहरण है।

उसका यौवन

यीशु लड़के और लड़कियों के लिए एक आदर्श उदाहरण है। पवित्र आत्मा ने मसीह के यौवन के बारे में हमें कुछ बताया है। लूका 2:51 कहता है कि वह अपने माता-पिता के ''वश में'' रहा था। एक बच्चे के लिए अपने माता-पिता का आज्ञाकारी होना सीखना जीवन का पहला नियम है, और इसी बात को अनदेखा किया जाता है।

फिर, एक युवक के रूप में, यीशु धार्मिक था। उसने कहा था कि ''[उसके लिए] अपने पिता के भवन में होना अवश्य'' है (लूका 2:49)। उसने पाप और ''जंगली बूटी'' नहीं बोई थी। लड़के और लड़कियां दोनों अपनी जवानी के समय निष्कलंक और धर्मी रहने के लिए यीशु के उदाहरण से सबक सीख सकते हैं।

उसका सांसारिक कार्य

धर्म शास्त्र में यह अकस्मात ही नहीं लिखा गया कि यीशु एक बढ़ई बना था (मरकुस 6:3)। उसने बढ़ई के काम को कभी भी अपना पेशा नहीं बनाना चाहा था, परन्तु लिखा है कि उसने यह काम सीखा था। निश्चय ही यह इसलिए लिखा गया है कि हम काम की गरिमा और व्यवसाय को सीखने के अच्छे कारण की प्रशंसा कर सकें। प्राचीन समय में रब्बी अर्थात धार्मिक गुरु यहूदी माता-पिता को सिखाते थे कि बच्चे को काम न सिखाना उसे चोर बनाने जैसा है।

उसका बपतिस्मा

यीशु हमारा इस बात में भी उदाहरण है कि वह बपतिस्मा लेने के लिए लगभग 70 मील चलकर गलील से उस स्थान पर गया जहां यूहन्ना बपतिस्मा देता था। बपतिस्मा लेने के लिए आप कितनी दूर चलकर जा सकते हैं ? कई लोग तो एक कदम भी नहीं चलेंगे। कई तो बपतिस्मा लेने से ही इन्कार कर देते हैं। यह स्पष्ट है कि ये लोग यीशु के उदाहरण को नहीं देखते हैं। उसके उदाहरण में विशेष तौर पर इसलिए भी ज़ोर दिया गया है क्योंकि उसने कोई पाप नहीं किया था, जिसे मिटाया जाए। फिर भी, उसने बपतिस्मा लेने पर ज़ोर दिया था। वह जानता था कि उसके पिता ने लोगों को पापों की क्षमा के लिए बपतिस्मा लेने की आज्ञा दी थी, यद्यपि उसने पाप नहीं किया था, फिर भी वह अपने पिता की हर आज्ञा को पूरा करना चाहता था। उसे अपने लिए इस आज्ञा को पूरा करने के लिए प्रचारक (यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले) से बात करनी पड़ी थी। उसने इसकी पहल की। आप अपने जीवन के बारे में इस सम्बन्ध में यीशु के उदाहरण के विषय में क्या कह सकते हैं ?

परीक्षा के द्वारा उसका विरोध

जिस प्रकार हमारे प्रभु ने परीक्षा का सामना किया था वह भी हमारे लिए एक अच्छा उदाहरण है। मनुष्य होने के कारण, उसे भी हमारी ही तरह परीक्षाओं का सामना करना पड़ा था। शैतान का सामना करने का हमारा एक साधन यह हो सकता है कि हम धर्मशास्त्र में से उद्धृत करें। यीशु पुराने नियम की आयतों को जानता था और उन्हें उद्धृत कर सकता था। परमेश्वर का वचन तीखी तलवार है, शैतान इसके काटने की शक्ति के सामने खड़ा नहीं रह सकता। इसलिए, यदि मैं और आप अपने प्राणों को ख़तरे में नहीं डालना चाहते, तो हमें शैतान से मिली चुनौतियों का सामना करने के लिए उस महान उदाहरण का अनुसरण करना चाहिए। हमें बाइबल से सीखकर इसमें से उद्धृत करना चाहिए।

खोए हुए के लिए उसका प्रेम

हमारे महान आदर्श में पापी लोगों को सिखाने की धुन एक और विशेष गुण है। अपने समय के धार्मिक अगुओं में जब यीशु की प्रसिद्धि कम हो रही थी, तो वह पापियों और समाज से निकाले गए लोगों के साथ समय बिताता था। एक अवसर पर, वह भूखा था, परन्तु एक पापी से बातें करने में इतना मग्न हो गया कि उसे अपनी शारीरिक भूख का ध्यान ही न रहा। यदि आप दूसरे लोगों के साथ सुसमाचार बांटने में कम दिलचस्पी लेते हैं तो आप अपने अगुवे को अनदेखा कर रहे हैं।

अपने शत्रुओं के लिए उसका प्रेम

अपने साथ दुर्व्यवहार करने वालों के प्रति यीशु के व्यवहार से उसके जीवन का एक बहुत बड़ा अध्याय बन जाता है। हम तो उनके साथ भलाई करेंगे जो हमारे साथ भलाई करते हैं, परन्तु यीशु उनसे भी प्रेम करता है और उसके प्रति सहानुभूति रखता था जो उससे

दुर्व्यवहार करते थे। उसने कहा, ''हे पिता, इन्हें क्षमा कर, क्योंकि ये नहीं जानते कि क्या कर रहे हैं'' (लूका 23:34)। पतरस ने लिखा था:

> ... मसीह भी तुम्हारे लिए दुख उठाकर, तुम्हें एक आदर्श दे गया है, कि तुम भी उसके चिह्न पर चलो। न तो उसने पाप किया, और न उसके मुंह से छल की कोई बात निकली (1 पतरस 2:21, 22)।

इसमें संदेह है कि हम में से बहुत से लोग इन सभी बातों में यीशु का अनुसरण करेंगे, परन्तु कोशिश न करना पाप है, और समय बीतने के साथ-साथ हम और भी अच्छा कर सकते हैं।

पिता के प्रति उसकी आज्ञाकारिता

अपने सांसारिक माता-पिता की आज्ञा मानने और अपने स्वर्गीय पिता की आज्ञाओं को पूरा करने के यीशु के अनुभव ने गतसमनी के बाग में आने पर उसकी सहायता की। उस परिचित स्थान पर, लगभग आधी रात को, हमारे प्रभु ने भूमि पर चित्त गिरकर ''ऊंचे शब्द से पुकार पुकारकर, और आंसू बहा बहाकर उससे जो उस को मृत्यु से बचा सकता था, प्रार्थनाएं और बिनती की'' (इब्रानियों 5:7)। वह मरना नहीं चाहता था। क्योंकि उसके लिए क्रूस पर लटकर मरना उतना ही पीड़ादायक था जितना कि आपके और मेरे लिए हो सकता है। उसके लिए अपनी शारीरिक इच्छा का इन्कार करना आवश्यक था। हम पढ़ते हैं, ''और पुत्र होने पर भी, उसने दुख उठा उठाकर आज्ञा माननी सीखी। और सिद्ध बनकर, अपने सब आज्ञा माननेवालों के लिए सदा काल के उद्धार का कारण हो गया'' (इब्रानियों 5:8, 9)।

यदि हम उसका इन्कार नहीं कर सकते जो हम चाहते हैं और नि:स्वार्थ रूप से और पूरे मन से अपने आपको उसे देने के लिए तैयार नहीं हैं, तो हमने आज्ञा मानना नहीं सीखा है। यीशु ने परमेश्वर का पुत्र होने के कारण शारीरिक सताव से छूटने का दावा नहीं किया था। जबकि उसका ऐसा व्यवहार था, तो हम उसके धन्य उदाहरण को मानने से कैसे इन्कार कर सकते हैं? (देखिए फिलिप्पियों 2:5.)